बुढ़ियाबखान।

शतक।

अर्थात् वञ्चक स्त्रियों के महाजाल से सती स्त्रियों के बचने के लिये सौ दोहा आदि छन्दों में एक बुढ़िया का वृत्तान्त।

जिसे पण्डितदेवकीनन्दन तिवारी की आज्ञानुसार बाबू रामकृष्ण वर्म्मा ने भारतजीवन प्रेस में छापा।

काशी

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई।

सन् १९०५ ई०।

दूसरीबार १०००

मूल्य /)